BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

भारतीय जैन संघटना समाचार

दिसम्बर, 2015
वर्ष 1 अंक 2

श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

पौधे आत्महत्या के
उगे सूखे खेतों में
हुई असुरक्षित नन्ही जाने
बिखर गये परिवार
सहारा दो, सम्बल दो
यही है, समय की पुकार

2 *राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से
*इनसे मिलिये –
श्री गौतम बाफना, हुबली
3 भूमि पुत्रों की आत्महत्याएँ : दुर्घटना या आपदा?
4-5 भूमि पुत्रों की संतानों का पुनर्वसन ; चित्र समाचार
- योजना निर्माण से क्रियान्वयन तक
6 आत्महत्याग्रस्त किसानो के बच्चों का शैक्षणिक पुनर्वसन
7 अल्पसंख्यक सूचनाएँ, जानकारी एवं समाचार
8 प्लास्टिक सर्जरी शिविर, पुणे

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से ....

प्रिय मित्रों,

कालिमामयी रात्रि की समाप्ति और सूर्य प्रकाश से दिन का प्रारम्भ प्रकृति का शाश्वत नियम है। सूर्यास्त के पश्चात सूर्य का उदय, हमें निराशाओं को छोड़ आशाओं का दामन थाम लेने का संदेश देता है। आशाएँ संजोना व स्वप्न देखना मानव प्रकृति है। आपकी आशाएँ फलीभूत हों व स्वप्न वास्तविकता में परिणित हों, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ वर्ष 2015 का यह अंतिम अंक आप तक इस विश्वास एवं भावना के साथ पहुँचाते हुए प्रसन्नचित्त हूँ कि वर्ष 2016 में नई उमंगों व नवसंकल्पों के साथ सप्तरंगी खुशियों का आगमन हम सभी के जीवन में हो।

यह नवंबर व दिसंबर माह का सयुंक्त अंक है। बी॰जे॰एस॰ समाचार को वर्ष 2016 से नया कलेवर प्रदान करने, अधिक आकर्षक तथा उपयोगी बनाने हेतु हम प्रयासशील रहेंगे. आशा करता हूँ कि आप सभी पाठकों का भावनात्मक सहयोग हमें सदैव सदैव मिलता रहेगा।

हम सभी ने यह अनुभव किया है कि समय सदैव एक समान नहीं रहता। प्रकृति भी मानव के धेर्य की परीक्षा लेती रहती है, फलस्वरूप उत्पन्न असामाजिक असंतुलन विभिन्न समस्याओं को जन्म देते हैं। इन परिस्थितियों को समय रहते समझना व समाधानों हेतु कार्य करना निश्चित ही कठिन होता है। हमें गर्व है कि भारतीय जैन संघटना के संस्थापक व हम सभी के प्रिय आदरणीय शांतिलालजी मुथ्था समाज में व्याप्त परिस्थितियों को ललकारने हेतु लालायित रहते हैं। उनकी कार्यशैली, अकल्पनीय क्षमता व अद्वितीय सामाजिक वैचारिकी ही उनकी विशेषता है, जो उनके महामानव होने का प्रमाण है।

मित्रों! मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि महाराष्ट्र राज्य के मराठवाड़ा क्षेत्र के लगभग 922 भूमि-पुत्रों द्वारा गत एक वर्ष में अपरिहार्य कारणों से की गई आत्महत्याओं के फलस्वरूप अंधकार से घिरे उनके घरों में प्रकाश का दीपक जलाने का कृतसंकल्प आदरणीय मुथ्थाजी के नेतृत्व में भारतीय जैन संघटना ने कर, उनकी संतानों के शैक्षणिक एवं पुनर्वसन का उत्तरदायित्व स्वीकार किया है। इस हेतु युद्ध स्तर पर सर्वेक्षण, परिवारजन एवं गांवजन से चर्चा विचारणा, 5वीं से 12वीं कक्षा के बालक/बालिकाओं की खोज आदि कार्य सम्पन्न कर, दीर्घकालीन शिक्षण कार्ययोजना का निर्माण सम्पूर्ण वैज्ञानिक पद्धत्ति से किया गया व 8 जिल्हों के 208 बालक/बालिकाओं को पुणे में भारतीय जैन संघटना स्थित वाघोली शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र में लाया गया जहां उनकी शैक्षणिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त शारीरिक विकास व मानसिक तथा भावनात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप हितकारी माहौल प्रदान किया जाएगा।

आदरणीय मुथ्थाजी की मानवीयता सभर वैचारिकी एवं दूरदृष्टी से हम सभी अभिभूत हैं। गत दो दशकों में मुथ्थाजी के नेतृत्व में भारतीय जैन संघटना द्वारा प्राकृतिक आपदा पीड़ित परिवारों के बच्चों के सफल शैक्षणिक पुनर्वसन के कार्यों से हम सभी अवगत हैं। 1993 में लातूर भूकंप में अनाथ व मेलघाट क्षेत्र में कुपोषणग्रस्तों के पुनर्वसन के पश्चात, उनमें से सफल जीवन-यापन कर रहे अनैक युवा मराठवाड़ा के इन बालक/बालिकाओं के स्वागत हेतु उपस्थित ही नहीं रहे अपितु उन्हें आश्वस्त भी किया कि वाघोली स्थित पुनर्वसन केंद्र में उनका भविष्य सुरक्षित है।

वर्ष 2016 की अग्रिम शुभकामनाओं सहित।

प्रफुल्ल पारख
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना

BJS भारतीय जैन संघटना समाचार

संपादक मण्डल
संपादक
प्रफुल्ल पारख, पुणे
कार्यकारी संपादक
निरंजन कुमार जुवाँ जैन, अहमदाबाद
सदस्य
कैलाशमल दुगड़, चैन्नई
सुरेश कोठारी, अहमदाबाद
सुदर्शन जैन, बडनेरा
वीरेंद्र जैन, इंदौर
महेश कोठारी, गोंदिया
संजय सिंगी, रायपुर
राजेंद्र लुंकड़, इरोड

इनसे मिलिये

श्री. गौतम बाफना, हुबली (कर्नाटक)
राजाध्यक्ष भारतीय जैन संघटना, कर्नाटक

श्री गौतम बाफना का जन्म 1 जनवरी, 1971 को हुबली (कर्नाटक) के संभ्रांत परिवार, पिता स्व॰ वागमलजी एवं मातुश्री पानीदेवी के यहाँ हुआ। आपकी शिक्षा हुबली मे हुई। वर्तमान मे आप MWB Group के डिरेक्टर हैं। आपने व्यावसायिक जीवन का शुभारंभ वर्ष 1992 मे पारिवारिक MWB Group से किया। आपने shoveling stone & blast furnace की marketing से प्रारम्भ कर MWB Group को उत्तर कर्नाटक के सर्वाधिक बड़े थोक व्यवसायी के रूप मे स्थापित किया जो मसाले, दाल व अन्न आदि के व्यापार में संलग्न है।

एक युवा व्यवसायी जिसे आधुनिक एवं स्पर्धात्मक बाजार में स्वयं को स्थापित कर प्रगति के सौपन सर करना हो, सामाजिक जीवन को प्राधान्यता देना अत्यंत ही दुष्कर होता है किन्तु आपमें नैसर्गिकरूप से विद्यमान सामाजिकता का ही परिणाम है कि आप बालकाल्य से ही सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रहे हैं। आप Mahaveer Limb Centre, Hubli के 4 वर्षों तक अध्यक्ष रहे व आपकी निष्ठा व लगन के कारण यह संस्था आज भी सुचारुरूप से कार्यरत है व अब तक 22000 से अधिक Limbs लगा चुकी है। आप महावीर यूथ फ़ेडरेशन, हुबली के अध्यक्ष पद पर 1996 में नियुक्त हुए जिसमें 'रोटी घर' का संचालन जरूरत मंदों को भोजन कराने हेतु होता है व आज भी लगभग 250 व्यक्तियों को प्रतिदिन लाभ प्राप्त होता है। लायन्स क्लब हूबली परिवार के आप वर्ष 2005-2007 में अध्यक्ष रहे। भारतीय जैन संघटना से आप वर्ष 2005 में जुड़े व 2011 में राजाध्यक्ष पद पर आसीन हुए। आपके नेतृत्व में भारतीय जैन संघटना, कर्नाटक में गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का अविरत एवं योजनाबद्ध पद्धत्ति से संचालन हो रहा है जिससे समाज उत्थान एवं विकास को वेग प्राप्त हुआ है।

वीरल एवं आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, मृदुभाषी, सादगी एवं सरलता की प्रतिमूर्ति, सफल व्यवसायी एवं कुशल सामाजिक नेतृत्वकार श्री गौतम बाफना आज की युवा पीढ़ी हेतु प्रेरणा के स्त्रोत हैं।

भूमि पुत्रों की आत्महत्याएँ : दुर्घटना या आपदा ?

भारत कृषि प्रधान देश है व उसकी अर्थव्यवस्था भी कृषि आधारित है। कृषि देश का राष्ट्रीय उद्योग भी है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सघन औद्योगीकरण को महत्व ही नहीं दिया गया अपितु इसे उत्तेजन देने हेतु पंचवर्षीय योजनाओं एवं सरकारी नीतियों मे व्यापक परिवर्तन किए जाते रहे, फलस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था एवं विकास दर में औद्योगिक उत्पादों के बहुमूल्य अंशदान को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता, किन्तु कृषि ही देश की अर्थव्यवस्था की मुख्य धुरी रही है।

स्पष्ट है कि कृषि का जितना संबंध खेत खलिहानों से है उससे भी अधिक किसानो के अंशदान से है, अतः उनकी उपार्जितता को अनदेखा नहीं किया जा सकता। सरकारी योजनाओं/नीतियों में कृषि उद्योग के विकास हेतु अविरत व योजनाबद्ध प्रयास किए जाते रहे हैं। हरित क्रांति के माध्यम से बेहतर सिंचाई की व्यवस्थाओं के साथ अनुसंधान आधारित खेती के संभवतः सभी योग्य प्रयास गत दशकों मे किए गए। आधुनिक खेती हेतु बेंको द्वारा भूमि पुत्रों को ऋण भी उपलब्ध कराये गए।

यह निर्विवादित सत्य है कि देश का ग्रामीण क्षेत्र सदैव से रूढ़ीवादी एवं पारंपरिक जीवनयापन शैली के कारण सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिकरूप से सामान्यतः पिछड़ा हुआ है। यह भी कटु वास्तविकता है कि राष्ट्रीय उद्योग कृषि के रीढ़ समान भूमि पुत्रों के सर्वांगीण एवं समयोचित विकास को सरकारी नीतियों एवं योजनाओं में यथेष्ट स्थान ही नहीं दिया गया। देश का हर राज्य व क्षेत्र विविधताओं से भरा पड़ा है अतः क्षेत्रीय विशेषताओं के साथ साथ क्षेत्रीय समस्याओं का भी इतिहास रच सा गया है। योग्य शिक्षा का अभाव, प्रकृति की निरंतर मार से ग्रस्त, कमजोर आर्थिक स्थितियों को वर्षों से सहन करता भूमि पुत्र व उसका परिवार स्थायी रूप से कर्ज़ में डूबा रहता है। नागरिकों के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन मे राज्य सरकारों की क्षमताएँ सदैव ही अवरोधरूप रही हैं। देश की प्रति व्यक्ति औसत आय अन्य देशों की तुलना में निम्नतम है, जिसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्र ही है। आर्थिक उदारीकरण के पश्चात असमानताओं का अंतर खतरनाक स्तर को पार कर चुका है। प्रजातंत्रीय व्यवस्थाओं में नागरिक सामाजिक सुरक्षा की अपेक्षाएँ रखें यह स्वाभाविक ही है किन्तु असमानताओं के अंतर में निरंतर वृद्धि ही आत्महत्या जैसी आपदाओं का कारण है।

कविता अय्यर का **"Maraathwada : India's emerging farmer suicide capital"** शीर्षक के साथ लेख 13 सितंबर, 15 को इंडियन एक्सप्रेस मे प्रकाशित हुआ। **वर्ष 2014 मे 574 भूमि पुत्रों द्वारा आत्महत्या की गई और वर्ष 2015 तक यह आंकड़ा 628 की संख्या को स्पर्श कर गया।** इंडियन एक्सप्रेस (9 दिसम्बर) में रिपोर्ट किया गया कि मराठवाड़ा में आत्महत्या का अकड़ा 1000 के पार पहुच गया है। लेखिका नुसार मानव जिंदगानियों के खो देने से भी अधिक भूमि पुत्रों के मनोबल का टूटना गणनातीत है।

एक ही क्षेत्र विशेष के भूमि पुत्रों द्वारा बड़ी संख्या में आत्महत्या हेतु प्रेरित होना, क्या यह समस्या है या आपदा ? कहीं यह उन तूफानों का संकेत तो नहीं है जो काल परिवर्तन के कारण उत्पन्न हो रहे हैं। हम सभी इससे अवगत हैं कि तूफान का परिणाम बरबादी के अतिरिक्त ओर कुछ नहीं होता और ऐसा ही भूमि पुत्रों के मामलों में हो रहा है, क्योंकि अब बिखरे व टूटे परिवार हैं जिनकी संतानों के समक्ष असुरक्षित एवं उद्देश्यहीन जीवन जीने का ही विकल्प शैष है।

आर्थिक स्तम्भ समान परिवार के मुखिया की क्षति परिवारजन व संबंधियों हेतु निश्चित ही वज्रपात है। स्थिति उस समय अत्यंत ही दुर्भाग्यपूर्ण बन पड़ती है जहां ऐसी घटना उन परिवारों मे हुई हो जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हों। उन परिवारों की स्थिति अधिक कष्टप्रद होती जाती है क्योंकि अविरत आर्थिक व मानसिक आघातों को झेलना दुष्कर होता है। ऐसे परिवारों के बच्चे इन आघातों के परिणामस्वरूप सर्वाधिक प्रभावित होते हैं क्योंकि न तो उनकी उम्र ही स्थितियों को समझने की होती है और न ही आपदा को चुनौती के रूप मे स्वीकार करने की।

सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत सरकार एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा उस परिवार को दी गई आर्थिक सहायता क्या मुसीबतों के अंत का परिणामलाक्षी समाधान है ? ऐसे परिवारों को सम्पूर्ण सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना नितांत आवश्यक है। नियमित आर्थिक व्यवस्थाओं के अतिरिक्त, परिवारजन की अवरोधित मानसिक वैचारिकी को प्रवाहित रखने के साथ बच्चों की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के उत्तरदायित्वों को परिपूर्ण करना होगा अन्यथा मुसीबतों मे बढ़ोतरी ही होगी । इन परिवारों की बाल युवा पीढ़ी का भटक जाना नक्सलवाद व अन्य समस्याओं को जन्म देने हेतु पर्याप्त है।

क्या देश का ग्रामीण समाज विघटन की ओर अग्रसर है ? मात्र माठवाड़ा ही नहीं अपितु तेलंगना के भूमि पुत्रों द्वारा की जा रही आत्महत्याओं के समाचार भी वर्तमान पत्रों की सुर्खियों मे होते हैं। वर्ष 2012 में 60,000 से अधिक आत्महत्याओं के साथ भारत विश्व में प्रथम स्थान पर रहा। प्रति वर्ष बढ़ रही आत्महत्या की दर के कारण क्या हैं ? इन्हें रोकने के उपाय क्या हैं ? सरकार व सामाजिक संस्थाओं के उत्तरदायित्व क्या हैं ? ऐसे अनेक अनुत्तरित प्रश्न हैं जो मंथन का विषय हैं। श्री. शांतिलालजी मुथ्था के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में, भारतीय जैन संघटना ने आत्महत्या ग्रस्त भूमि पुत्रों के परिवारों के 193 बालक/बालिकाओं की शिक्षा व अन्य उत्तरदायित्वों को स्वीकार किया है जो JAINS FOR INDIA को चरितार्थ करने के साथ राष्ट्र निर्माण में जैन समाज के रचनात्मक अंशदान का प्रमाण है।

26 से 30 अक्टूबर, 2015

- योजना का वैचारिकीय क्रमिक विकास
- क्रियान्वयन हेतु "भावी पीढ़ी का सक्षमीकरण" परियोजना का निर्माण
- सर्वेक्षण टीमों को अंतिम स्वरूप प्रदान किया गया
- सर्वेक्षण प्रपत्र, संबन्धित साहित्य, मार्गदर्शिका, प्रश्नोत्तरी आदि का प्रकाशन कर आगामी कार्यवाही हेतु बी॰जे॰एस॰मुख्यालय अनुसंधान टीम को सुपुर्द
- सर्वेक्षण टीमों को आवश्यक प्रशिक्षण दिया गया

13 नवेम्बर, 2015

तीन जिल्हा समितियों का परिवारों से संपर्क, सर्वेक्षण एवं शैक्षणिक पुनर्वसन योग्य बच्चों की सूची तैयार करने हेतु गठन

14 नवेम्बर, 2015

किसान परिवारों से संपर्क व बच्चों के शैक्षणिक पुनर्वसन हेतु रजिस्ट्रेशन आदि।

17 नवेम्बर, 2015

श्री शांतिलाल मुथ्था ने बीड़ मे प्रातः 10.45, लातुर मे मध्यानह 4 व ओस्मानाबाद में रात्रि 9 बजे प्रेस कोन्फरेंस को संबोधित किया

भावी पीढ़ी का सक्षमीकरण
Empowerment
of Next Generation

21 नवेम्बर, 2015

किसान परिवारों के बालक/बालिकाओं का पुणे स्थित वाघोली पुनर्वसन केंद्र मे आगमन एवं स्वागत प्रातः 10 बजे

22 नवेम्बर, 2015

स्वस्थ रहो !

- सम्पूर्ण स्वास्थ्य परीक्षण
- यूनिफोर्म, कपड़े व शिक्षण सामग्री वितरण

23 नवेम्बर, 2015

जीवन यात्रा का नव शुभारंभ

25 नवेम्बर, 2015

पुणे दर्शन (गुरुनानक जयंती पर सार्वजनिक अवकाश के दिन)

- आगा खाँ महल, कातरज स्नेक पार्क, पेशवा पार्क, सारस बाग एवं दगडू शेठ गणपति मंदिर में आरती एवं अर्चना

भूतकाल का विस्मरण

सरस्वती का विद्यालय में प्रथम दिवस

गायकवाड़ परिवार, बीड़ ने मुखिया खोया, किन्तु सरस्वती की माँ ने उसे बी जे एस विद्यालय, पुणे भेजने का निर्णय लिया। सरस्वती की क्षमताओं व नेतृत्वगुण की पहचान कर से उन सभी बालक/बालिकाओं का मॉनिटर नियुक्त किया जो इस पुनर्वसन केंद्र में मराठवाड़ा से लाये गए।

आत्महत्याग्रस्त किसानो के बच्चों का शैक्षणिक पुनर्वसन

21 नवेम्बर, 2015 को पुणे के वाघोली स्थित शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र में राष्ट्रीय ध्वज, आँखों में चमक एवं आत्मविश्वास लिए, मंच के सामने उनके लिए नियत स्थान पर बेठने के लिए आगे बढ़ते नन्हें मुन्ने, एक हर्ष मिश्रित विस्मयकारी दृश्य का अनुभव, निश्चित ही हृदय का भावनात्मक लहरों मे डूब जाना व मन में संवेदनाओं का स्पंदन होना स्वाभाविक था। यह विशेष कार्यक्रम उन बालक/बालिकाओं के स्वागतार्थ आयोजित किया गया, जिन्हें महाराष्ट्र के मराठवाड़ा के ग्रामीण अंचलो के अंतर्विस्तारों से शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र, वाघोली, पुणे मे लाया गया, जिनके भूमि-पुत्र पिता कुछ समय पूर्व आत्महत्या के फलस्वरूप अपमृत्यु को प्राप्त हुए।

ये बालक/बालिकाएँ पूरे दिन की यात्रा के पश्चात पुणे पहुंचे। भारतीय जैन संघटना के संस्थापक शांतिलालजी मुथ्था सम्पूर्ण यात्रा मे इन बालक/बालिकाओं के साथ उनके वाहन मे रहे. कुछ ही घंटो की यात्रा मे मुथ्थाजी के साथ बिताए क्षण, जहां उन्हें उनके सुरक्षित भावी का आभास करा रहे थे, वहीं एक पिता खोने पर दूसरे पिता मिल जाने का एहसास उनके चेहरों की चमक बढ़ा रहा था।

इन बालक/बालिकाओं के स्वागत समारोह मे उपस्थित लातूर भूकंप में अनाथ हुए तथा मेलघाट क्षेत्र के कुपोषणग्रस्त पूर्व विद्यार्थियों ने अनुभवों, अभिप्रायों एवं मंतव्यो को प्रस्तुत किया। उन्होनें बतलाया कि किस तरह उन्हें अनाथ या कुपोषित होने पर पुणे लाया गया व यह आधुनिक सामाजिक तीर्थ, भारतीय जैन संघटना द्वारा संचालित शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र, वाघोली, पुणे उनका घर बन गया व आदरणीय मुथ्थाजी ही उनके पिता व सरंक्षक हैं, जिन्होने सम्पूर्ण उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर आज उन्हें इस लायक बना दिया कि वे आत्मसम्मान के साथ स्वयं के पैरो पर खड़े हैं।

कार्यक्रम मे उपस्थित वरिष्ठ नेता श्री शरद पवार, महाराष्ट्र सरकार के मंत्री श्री गिरीश बापट, शिक्षा आयुक्त, महाराष्ट्र डा॰ भापकर ने इन बालक/बालिकाओं का स्वागत किया। श्री शरद पवार ने उनके अभिभाषण मे अब तक हुई प्राकृतिक आपदाओं के पश्चात बचाव एवं राहत कार्यों मे मुथ्थाजी एवं भारतीय जैन संघटना की कार्यशैली एवं गुणवत्तापूर्ण स्तर पर उनके अनुभवों को श्रोताओं एवं इन बालक/बालिकाओं के साथ बाँटा। श्री बापट ने भी मुथ्थाजी के साथ कार्य करने के दौरान उन्हें हुए अनुभवों को श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। डा. भापकर ने शिक्षण विभाग द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी को अर्थपूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु सरकार की योजनाओं से अवगत कराया। आदरणीय मुथ्थाजी ने कहा की गत 25 वर्षों से भारतीय जैन संघटना द्वारा चलाये जा रहे इस शैक्षणिक पुनर्वसन कार्यक्रम मे पहली बार बालिकाओं के पुनर्वसन का उत्तरदायित्व स्वीकार किया गया है जो मराठवाड़ा की प्रगति के लिए, उन्हें सक्षम बनाना ही हमारा उद्देश्य है।

एक 12 वर्षीय बालिका अदिति जो चिंचोली(गाँव) बीड तालुका से आई, अत्यंत ही संकल्पित स्वरों मे कहा कि यहाँ से शिक्षित होकर वह सर्वप्रथम उसकी माँ व भाई की देखभाल करेगी क्योंकि पिता की अपमृत्यु के पश्चात इस जीवन मे उनका अब कोई शेष नहीं रहा। नन्ही अदिति ने अत्यंत ही हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति मे कहा कि लड़कियों का सिर्फ इसलिए शीघ्र विवाह नहीं होना चाहिए कि उनके पिता अब इस दुनिया मे नहीं रहे।

इन सभी बालक/बालिकाओं ने विद्यालय मे शिक्षण लेना प्रारम्भ कर दिया है। इनका सम्पूर्ण मेडिकल चेक-अप करवाया गया व एक मेडिकल टीम की नियुक्ति की गई है जो इनकी शारीरिक व मानसिक स्थितियों पर देखरेख कर आवश्यक उपचार करेगी। पुणे पहुँचने के प्रथम सप्ताह मे ही गुरुनानक जयंती के अवसर पर इन्हें पुणे दर्शन हेतु ले जाया गया जहां इन्होने प्रसिद्ध गणेश मंदिर मे आरती एवं अर्चना की।

बालक/बालिकाओं का दूसरा जत्था 2 दिसंबर को मुथ्थाजीएवं श्री प्रफुल्ल पारख की देखरेख मे पुणे पहुंचा जिन्हें मराठवाड़ा के पाँच जिलों के अंतर्विस्तारों से लाया गया। इन समस्त बालक/बालिकाओं के सम्पूर्ण व सफल उत्तरदायित्व निर्वहन हेतु भारतीय जैन संघटना ने विशिष्ट कार्यशैली का परिचय देते हुए निरंतर पर्यवेक्षण (monitoring), मूल्यांकन (evaluation) तथा अंकेक्षण (audit) आदि की पुख्ता योजना तैयार की है।

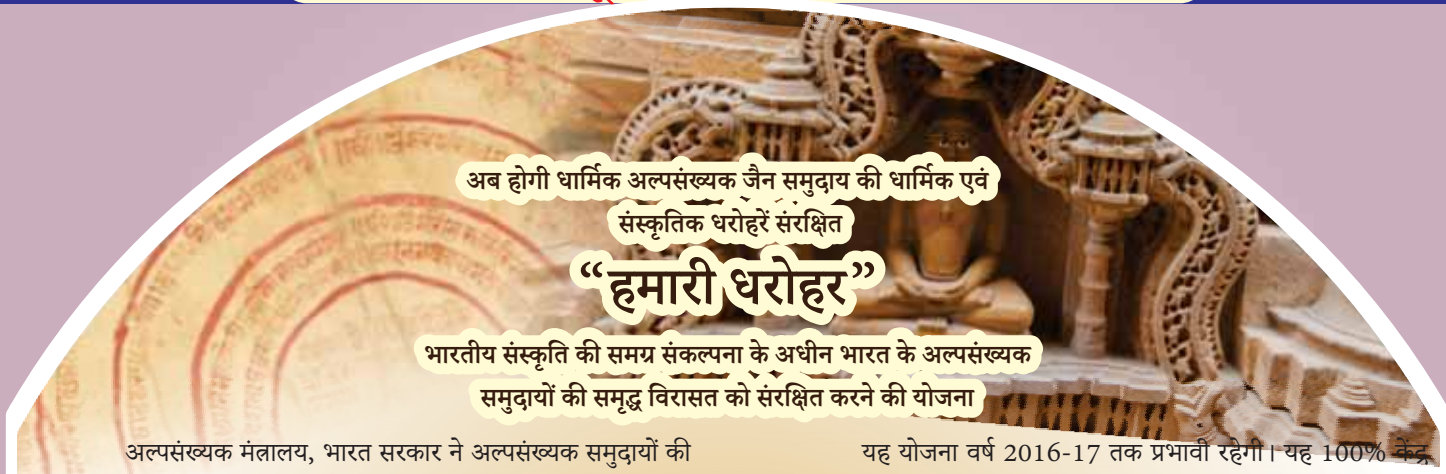

अब होगी धार्मिक अल्पसंख्यक जैन समुदाय की धार्मिक एवं संस्कृतिक धरोहरें संरक्षित

"हमारी धरोहर"

भारतीय संस्कृति की समग्र संकल्पना के अधीन भारत के अल्पसंख्यक समुदायों की समृद्ध विरासत को संरक्षित करने की योजना

अल्पसंख्यक मंत्रालय, भारत सरकार ने अल्पसंख्यक समुदायों की समृद्ध संस्कृति एवं विरासत को संरक्षण प्रदान करने हेतु "हमारी धरोहर" योजना वर्ष 2014-15 से प्रारम्भ की है जिसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति की समग्र संकल्पना के अंतर्गत अल्पसंख्यकों की समृद्ध विरासत जैसे साहित्य/हस्तलिपियों/पाण्डुलिपियों/दस्तावेज़ों आदि को संरक्षित करना, कला विधाओं के प्रलेखन, इतिहास को प्रदर्शित करने व संरक्षण हेतु एथनिक संग्राहलयों को सहायता, अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित करने हेतु संबन्धित सेमीनारों/कार्यशालाओं के आयोजन मे सहायता व अनुसंधान कार्यों हेतु अध्येतावृत्ति (फ़ेलोशिप) प्रदान करना है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, राष्ट्रीय संग्रहालय-दिल्ली, राष्ट्रीय अभिलेखागार-नई दिल्ली, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं संस्कृतिक संगठन, भारतीय राष्ट्रीय कला व संस्कृतिक विरासत न्यास एवं विश्व स्मारक निधि आदि संस्थाओं की सलाह एवं मार्गदर्शन मे सांस्कृतिक मंत्रालय के साथ इस योजना का संचालन अल्पसंख्यक मंत्रालय कर रहा है।

अल्पसंख्यक समुदाय के पंजीकृत/मान्यता प्राप्त सांस्कृतिक/अनुसंधान संस्थान जो सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम के अंतर्गत कम से कम तीन वर्षों से पंजीकृत हों, तथा धरोहरों के संरक्षण संबंधी अनुभव रखते हों, 'हमारी धरोहर' के अंतर्गत संरक्षण एवं संवर्धन की योजनाएँ प्रस्तावित कर सकेंगे।

जैन समुदाय के अनुसंधान संस्थान जो धर्म, संस्कृति एवं विरसतों आदि विषय पर विश्वविद्यालयों के नियमानुसार एम०फ़िल०/पी०एच०डी० प्रत्याशियों/ अभ्यार्थियों के माध्यम से अनुसंधानरत हैं, अध्येतावृत्ति (फ़ेलोशिप) के लिए नियमों के अधीन आवेदन कर सकेंगे।

यह योजना वर्ष 2016-17 तक प्रभावी रहेगी। यह 100% केंद्र सरकार की योजना है जो चुनिन्दा संस्थाओं (Project Implementing Agencies) के माध्यम से मंत्रालय द्वारा सीधे ही क्रियान्वित होगी। योजना के अंतर्गत अल्पसंख्यकों के समृद्ध विरासत के सभी रूपों के संरक्षण तथा प्रचार के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर ध्यान देने और उनमें सुधार लाने के उद्देश्य से अवसंरचना विकास (Infrastructure development) हेतु पूंजी लागत (Capital Cost) सहित आवर्ति अनुदानों (Recurring Cost) और अनावर्ति अनुदानों (Non-Recurring Cost) के रूप मे उपलब्ध कराई जाएगी। प्रस्तावित परियोजनाएं अनुमोदन समिति द्वारा संस्तुत एवं अनुमोदित की जाएंगी।

आर्थिक सहायता समृद्ध विरासत के लिए अध्येतावृत्ति (फ़ेलोशिप), अनुसंधान और विकास कार्य तथा इसके संरक्षण और संवर्धन के साथ साथ विरासत शिक्षा के क्षेत्र मे परियोजनाओं,कार्यों को लोकप्रिय बनाने और प्रकाशन आदि के लिए भी मुहैया कराई जाएगी। अध्येतावृत्ति (फ़ेलोशिप) वरिष्ठ शोधकर्ताओं/अभ्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C.) के विद्यमान वित्तीय मानकोनुसार प्रदान की जाएगी।

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय संगठनों/संस्थानों से समाचार पत्रों तथा मंत्रालय की सरकारी वेबसाइट मे विज्ञापन के माध्यम से चयन हेतु निर्धारित प्रपत्र मे प्रस्ताव आमंत्रित करेगा। मंत्रालय उन विशेषज्ञ संगठनों को, जो निर्धारित प्रपत्र मे परियोजना प्रस्तुत करते हैं तथा संगत क्षेत्र के पेनल मे शामिल हैं, परियोजनाएं प्रस्तुत कर सकेंगे। इसी तरह, मंत्रालय संगत क्षेत्र मे अध्येतावृत्ति (फ़ेलोशिप) प्रदान कर सकता है बशर्ते कि अभ्यार्थी निर्धारित पात्रता मानदंड को पूरा करते हों।

जैन शिक्षण संस्थाएं संवैधानिक अधिकारों का लाभ लें

औरंगाबाद (मराठवाड़ा) मे 29 अक्तूबर, 2015 को जैन शिक्षण संस्थाओं हेतु कार्यशाला आयोजित हुई

भारतीय जैन संघटना द्वारा अल्पसंख्यक लाभ पर चलाये जा रहे राष्ट्र स्तरीय जन जागृति अभियान के अंतर्गत 29 अक्टूबर, 2015 को औरंगाबाद में स्थानीय बी०जे०एस० एवं जितो ने सयुंक्तरूप से मराठवाडा (महाराष्ट्र) के जैन शिक्षण संस्थाओं हेतु कार्यशाला का आयोजन किया। 30 से अधिक शिक्षण संस्थानों के ट्रस्टीयों एवं प्रधानाचार्यों ने कार्यशाला में भाग लिया। मुख्य प्रशिक्षक श्री सुदर्शन जैन, बड़नेरा एवं श्री निरंजन जुवाँ जैन, अहमदाबाद ने इस एक दिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षण प्रदान किया व अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थाओं के संवैधानिक अधिकारों व लाभ की विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान की।

सम्पूर्ण देश में स्वतंत्रकाल के समय से ही 2500 से अधिक शिक्षण संस्थाओं का संचालन जैन समाज द्वारा होता आ रहा है। गत माह सांगली (महाराष्ट्र) में व औरंगाबाद में आयोजित कार्यशालाओं से यह वास्तविकता स्पष्टरूप से सामने आई की अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थाओं का प्रबंधन, उन्हें प्राप्त संवैधानिक अधिकारों व लाभ की योजनाओं से अनभिज्ञ है। इतना ही नहीं, जिन शैक्षणिक संस्थाओं ने अल्पसंख्यक दर्जा प्राप्त किया हुआ है वे भी नियमों आदि की सम्पूर्ण जानकारी के अभाव में विविध प्रबंधन लाभों व छूटों के प्रयोग में असमर्थ हैं।

भारतीय जैन संघटना का उद्देश्य है कि इन कार्यशालाओं के माध्यम से सम्पूर्ण देश की जैन शिक्षण संस्थाओं को अल्पसंख्यक दर्जा प्राप्त करने हेतु आवश्यक जानकारी देकर उन्हें संबन्धित विषय पर कानूनी परामर्श भी सुलभ कराये।

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

Free Plastic Surgery Camp

25 YEARS

Free Surgery will be done for the following patients:

• Cleft lip & Palate • Scars on face • Nose & ear deformity • Eyelid defect

Camps conducted at following places:

1	Nashik	5-6-7 December 2015
2	Ahmednagar	8-9 December 2015
3	Beed	10-11 December 2015
4	Nanded	10-12 December 2015
5	Risod	12 December 2015
6	Aurangabad	13-18 December 2015

Camps planned at following places:

7	Kolhapur	22-23 December 2015
8	Pune	7-10 January 2016
9	Nagpur	11-12 January 2016
10	Hubli	14-15 January 2016

RNI No. - MAHBIL 07247/2015

Book-Post

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana
Muttha Towers, Loop Road,
Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411006
Tel.: 020 4128 0011, 4128 0012, 4128 0013
Website : www.bjsindia.org E mail : info@bjsindia.org
Facebook : www.facebook.com/BJSIndia

मुद्रक तथा प्रकाशक – **प्रफुल्ल पारख** (प्रधान सम्पादक), 1184/4 ,शिवाजी नगर, नियर फर्ग्युसन कॉलेज रोड, पुणे - 411005 द्वाराभारतीय जैन संघटना के पक्ष में प्रभात प्रिंटिंग वर्क्स, 427, गुलटेकडी, पुणे - 411037 से मुद्रित तथा मुथ्था टावर, लूप रोड, नियर डान वास्को चर्च, येरवडा, पुणे - 411006 से प्रकाशित. सम्पादक – **प्रफुल्ल पारख,** राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सीईओ, भारतीय जैन संघटना. फोन –(020) 41200600 web site-www.bjsindia.org
Rs.10/- Life Subscription